(४) **अपामार्ग (लटजीरा/चिचिड़ा)** – यह ३ फीट ऊँचाई का छोटा झाड़ीनुमा पौधा है। इसके पुष्प व फल एक २०–२२'' लम्बी शाख पर चारों तरफ स्थापित होते हैं। फल काँटेदार होते हैं तथा सम्पर्क में आने पर वस्त्रों पर चिपक जाते हैं। उर्ध्व शाख पर लगे पुष्प शीर्ष पर लालपन लिये तथा नीचे की तरफ हरापन लिये सफेद होते हैं।

(५) **पिप्पल (पीपल)** – यह अतिशय ऊँचाई का विशालकाय वृक्ष है। पत्ते हृदयाकार चिकने होते हैं। आघात करने पर घाव से दूधिया पदार्थ निकलता है।

(६) **औडम्बर (गूलर)** – यह अच्छी ऊँचाई का वृक्ष है। पत्ते आदि चारापानी के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। फल गोल तथा वृक्ष पर गुच्छों के रूप में लगते हैं। कच्चे फल हरे तथा पकने पर गुलाबी लाल रंग के हो जाते हैं। जिन्हें पशु–पक्षी रूचि से खाते हैं।

(७) **शमी (छ्योकर)** –यह एक मध्यम ऊँचाई का बबूल सदृश्य वृक्ष है परन्तु इसके काँटे बबूल से छोटे होते हैं। सामान्यत शुष्क बीहड़ भूमि पर पाया जाता है। फलियाँ गुच्छों के रूप में लगती हैं।

(८) **दूर्वा (दूब)** – यह सबसे सामान्य रूप से पायी जाने वाली घास है जो प्रायः अच्छी भूमि पर उगती है तथा 'लॉन ग्रास' के नाम से ख्यातिप्राप्त है। हवन–यज्ञादि में यह घास प्रयोग में आती है।

(९) **कुश (कुश)** – यह शुष्क बंजर भूमि में उगने वाली अरुचिकर घास है। यह एक अति पवित्र घास है जिसकी पूजा की 'आसनी' बनती है तथा यज्ञीय कार्यों में इसकी 'पवित्री' पहनते हैं।

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, 211, निशातगंज, लखनऊ; दूरभाष : 2782172, 2782346; email : shivamarts@sancharnet.in

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड
पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट : upsbdb.org; **ईमेल :** upstatebiodiversityboard@gmail.com

आलेख व छाया चित्र : संजीव कुमार शर्मा, सहायक वन संरक्षक

नवग्रह वाटिका

उ० प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

ग्रह :

पृथ्वी से आकाश की ओर देखने पर आसमान में स्थिर दिखने वाले पिण्डों/छायाओं को नक्षत्र और स्थिति बदलते रहने वाले पिण्डों/छायाओं को ग्रह कहते हैं। ग्रह का अर्थ है पकड़ना। सम्भवतः अन्तरिक्ष से आने वाले प्रवाहों को धरती पर पहुँचने से पहले ये पिण्ड और छायायें उन्हें टी.वी. के अन्टीना की तरह आकर्षित कर पकड़ लेती हैं और पृथ्वी के जीवधारियों के जीवन को प्रभावित करती हैं। इसलिए इन्हें ग्रह कहा गया और इन्हे बहुत महत्त्व दिया गया।

नवग्रह :

भारतीय ज्योतिष मान्यता में ग्रहों की संख्या ९ मानी गयी है, जेसा निम्न श्लोक में वर्णित है–

सूर्य्यचन्द्रो मंगलश्च बुधश्चापि बृहस्पतिः।
शुक्रः शनेश्चरो राहुः केतुश्चेति नव ग्रहाः।।

अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि राहु और केतु ये नव ग्रह हैं। *– शब्द कल्पद्रुम*

इनमें प्रथम ७ तो पिण्डीय ग्रह हैं और अन्तिम दो राहु और केतु पिण्ड रूप में नहीं हैं बल्कि छाया ग्रह हैं।

ग्रहशान्ति :

ऐसी मान्यता है कि इन ग्रहों की विभिन्न नक्षत्रों में स्थिति का विभिन्न मनुष्यों पर विभिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है, ये प्रभाव अनुकूल और प्रतिकूल दोनों होते हैं। ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के शमन के अनेक उपाय बताये गये हैं जिनमें एक उपाय यज्ञ भी है।

समिधायें :

यज्ञ द्वारा ग्रह शान्ति के उपाय में हर ग्रह के लिए अलग अलग विशिष्ट वनस्पति की समिधा (हवन प्रकाष्ठ) प्रयोग की जाती है, जेसा निम्न श्लोक में वर्णित है–

अर्कः पलाशः खदिरश्चापामार्गोऽथ पिप्पलः।
औडम्बरः शमी दूर्व्वा कुशश्च समिधः क्रमात्।।

अर्थात अर्क (मदार), पलाश, खदिर (खैर), अपामार्ग (लटजीरा), पीपल, ओड़म्बर (गूलर), शमी, दूब और कुश क्रमशः (नवग्रहों की) समिधायें हैं। *– गरुण पुराण*

इस तरह ग्रह अनुसार वनस्पतियों की सूची निम्न प्रकार है –

नवग्रह वनस्पतियों की सूची

ग्रह	वनस्पति		
	संस्कृत नाम	स्थानीय हिन्दीनाम	वैज्ञानिक नाम
(१) सूर्य	अर्क	आक	*कैलोट्रपिस प्रोसेरा*
(२) चन्द्र	पलाश	ढाक	*ब्यूटिया मोनोस्पर्मा*
(३) मंगल	खदिर	खैर	*अकेसिया कटेचू*
(४) बुध	अपामार्ग	चिचिड़ा	*अकाइरेन्थस एस्पेरा*
(५) बृहस्पति	पिप्पल	पीपल	*फाइकस रिलीजिओसा*
(६) शुक्र	औडम्बर	गूलर	*फाइकस ग्लोमरेटा*
(७) शनि	शमी	छ्योकर	*प्रोसोपिस सिनरेरिया*
(८) राहु	दूर्व्वा	दूब	*साइनोडान डेक्टाइलान*
(९) केतु	कुश	कुश	*डेस्मोस्टेचिया बाईपिन्नेटा*

ग्रहशान्ति के यज्ञीय कार्यों में सही पहचान के अभाव में अधिकतर लोगों को सही वनस्पति नहीं मिल पाती, इसलिए नवग्रह वृक्षों को धार्मिक स्थलों के पास रोपित करना चाहिए ताकि यज्ञ कार्य के लिए लोगों को शुद्ध सामग्री मिल सके। यही नहीं, यह विश्वास किया जाता है कि पूजा–अर्चना के लिए इन वृक्ष वनस्पतियों के सम्पर्क में आने पर भी ग्रहों के कुप्रभावों की शान्ति होती है अतः नवग्रह वनस्पतियों के रोपण की महत्ता और बढ़ जाती है।

नवग्रह वाटिका :

नवग्रह मंडल में ग्रहानुसार वनस्पतियों की स्थापना करने पर वाटिका की स्थिति निम्नानुसार होगी –

केतु कुश	बृहस्पति पीपल	बुध लटजीरा
शनि शमी	सूर्य आक	शुक्र गूलर
राहु दूब	मंगल खैर	चन्द्र ढाक

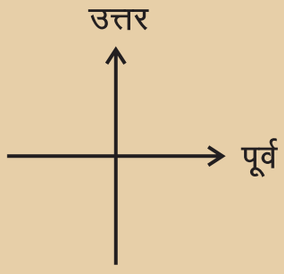

नवग्रह वृक्षों की स्थापना में संभवतः इसी स्थिति क्रम का उपयोग करना सर्वाधिक उचित होगा।

रोपण स्थल पर इन वनस्पतियों के बीच की दूरी इनके छत्र के अनुसार तथा उपलब्ध स्थान के अनुसार रखी जा सकती है। नवग्रहों वनस्पतियों की पहचान स्वरूप विशिष्ट गुण निम्न प्रकार हैं –

(१) **आक (मदार)** – यह ४ से ८ फीट ऊँचाई वाला झाड़ीनुमा पौधा है यह प्रायः निर्जन बंजर भूमि पर पाया जाता है। इसके किसी भाग (किसी हिस्से) को तोड़ने पर सफेद रंग का दूधिया पदार्थ निकलता है। इसका पुष्प लालिमा लिये सफेद होता है, फल मोटी फली के रूप में पत्तों के वर्ण का होता है। बीज रोयेंदार होता है।

(२) **ढाक (पलास)** – यह मध्यम ऊँचाई का वृक्ष है। इसकी विशिष्ट पहचान इसके तीन पत्रकों वाले पत्ते हैं जिसका उपयोग पत्तल दोना बनाने में किया जाता है। जिसकी ऊपरी सतह चिकनी होती है। पुष्प केसरिया लाल रंग के होते हैं जो फरवरी मार्च में उगते हैं।

(३) **खादिर (खैर)** – यह सामान्य ऊँचाई का रुक्ष–प्रकृति का वृक्ष है।सामान्यतः नदियों के किनारे की रेतीली शुष्क भूमि पर प्राकृतिक रूप से उगता है। पत्तियाँ बबूल सदृश्य छोटे–छोटे पत्रकों से बनी होती हैं। फल शीशम सदृश्य फली के रूप में होते हैं।